एकलव्य का अँगूठा

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

एकलव्य का अँगूठा

(कविता-संग्रह)

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

समर प्रकाशन

समर प्रकाशन
64-ए, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर
दूरभाष : 0141-2213700, 98290-18087
ई-मेल : samarprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © अजय कुमार शर्मा

प्रथम संस्करण : फरवरी, 2020
ISBN : 978-93-88781-20-6
कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'
आवरण संयोजन : समर टीम

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर # 09829018087

मूल्य : ₹ 120/-

EKLAVYA KA ANGOOTHA (POETRY)
Written by 'Sathi' Jahanavee (Ajay Kumar Sharma)

धरती माँ,
हर उस जीव,
नदिया व शजर को
जिसकी वज़ह से यह क़ायनात
ख़ूबसूरत, महफ़ूज़ व ख़ुशहाली से आबाद है

और

माँ की निस्वार्थ
ममता, करुणा, स्नेह,
वात्सल्य और इन्सानियत
जो किसी भी मज़हब, धन दौलत
लोभ लालच और दीनो ईमान से परे हैं

अनुक्रम

सहज सरल मूर्खता	13
स्वाभाविक ज़िम्मेदारी	30
पुरुषार्थ	34
परमार्थ और पुरुषार्थ	36
ख़ुशहाली की जड़ें	50
अहसास	60
करुणा और स्नेह	66
माँ का मज़हब	68
अपनी अपनी औक़ात	72
अपनी अपनी दास्तान	81
बेगुनाह बदनसीब क़ैदी	89

मेरी क़लम से मेरे ख़यालात

पूर्व में 18 काव्य संग्रहों के विमोचन के बाद अब एक ग़ज़ल संग्रह 'ख़ुद को बहुआयें', दो रूमानियत मुक्तक संग्रह 'जंजीरों में हवा', 'अज्ञातवास', सात छन्द मुक्त कविता संग्रह 'इलाज ही बीमार', 'दो मिनट का मौन', 'एकलव्य का अँगूठा', 'जीवन ही जेल', 'चुल्लू भर पानी में', 'गिरेबान में झाँक कर', 'रोटी में भूख' प्रकाशित कराने की ओर अग्रसर हूँ।

लिखना और पढ़ना मेरे लिये एक नियमित दैनिक प्रक्रिया है इसलिये इतना कुछ लिखने का मुश्क़िल काम सहजता और सरलता से मेरे लिये बहुत आसान रहता है। लिखने के लिये मुझे कोई विशेष मेहनत नहीं करनी पड़ती। नियमित दैनिक दिनचर्या में जो पढ़ता, देखता, सुनता, समझता और सहन करता हूँ उसको ही कुछ अलग संवेदनशील तरह से सोच कर लिखना ही मेरे लिये एक रचना कर्म है। जो कभी ग़ज़ल में तो कभी मुक्तक तो कभी कविता के रूप में आकार लेकर साकार होता है। रचनाओं की विषय वस्तु में अक्सर संवेदनशील करुणा के साथ व्यंग्य होता है। क्योंकि:-

मैं जब ख़ुद के भीतर जाता हूँ
तब तो मैं ख़ुद भी तर जाता हूँ
ख़ुद ही ख़ुद को लायक समझ
मुश्क़िल भी आसाँ कर जाता हूँ

मुझे साहित्य की किसी भी विद्या की कोई विशेष जानकारी नहीं है इसलिये मैं अपने आपको साहित्यकार नहीं मानकर एक मेहनती और ईमानदार रचनाकर्मी मानता हूँ। इसलिये इन रचनाओं को व्याकरण के दृष्टिकोण से परखना उचित नहीं होगा। क्योंकि:-

मैं तो वैसा भी नहीं, मैं तो उनके जैसा भी नहीं
मैं जैसा भी हूँ वैसा ख़ुद को हाज़िर कर रहा हूँ

इन काव्य संग्रहों की रचनायें रहस्य और छायावाद में न होकर इन रचनाओं की विषयवस्तु, सोच और शब्दों का चयन इस प्रकार किया गया है कि स्पष्टवादिता से समाज का हर वर्ग, किसी भी उम्र का इन्सान इन रचनाओं को आसानी से समझ ले और उसको अपने अहसास और जज़्बात, ख़्वाब और ख़याल इन रचनाओं में मिले क्योंकि इन रचनाओं की विषय वस्तु व्यक्तिगत नहीं होकर समग्र समाज का चिन्तन और मनन का दृष्टिकोण है। क्योंकि:-

जिसमें मिला उसी रंग का हो गया
पानी का यही रंग तो हिन्दुस्तानी है

बहुत कुछ ऐसा होता है जो आँखों ने देख तो लिया, नज़रों में आकार, साकार भी हो गया, अहसास और महसूस भी कर लिया मगर कहने और लिखने के लिये शब्द नहीं होते। वैसे भी बहुत कुछ ऐसा भी लिखने में आ जाता है जो कल्पनाओं से परे की सच्चाई होते हैं। कई बार सामान्य सी विषय वस्तु पर भी बहुत कुछ बहुत अच्छा लिखने में आ जाता है तो कई बार बहुत अच्छी विषय वस्तु पर भी कुछ भी लिखने में नहीं आता है। कुछ भी नहीं लिख पाना या बहुत कुछ लिख जाना यह सब मनोस्थिति पर निर्भर करता है। कुछ तहरीरें पत्थरों पर लिखी हुई तहरीर जैसी होती है जो समय के साथ धूमिल होकर मिट जाती हैं मगर कुछ तहरीरें दिलो दिमाग़ में असर कर जाती हैं वो लिखी हुई नहीं होकर भी कभी नहीं मिटती। क्योंकि:-

आँखों के पास कहने को ज़ुबान नहीं
ज़ुबान के पास आँखों के बयान नहीं
न तो कानों सुनी और न आँखों देखी
कोई सच दिले आवाज़ के समान नहीं

इन रचनाओं में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, मानसिक राजनैतिक और सरकारी विसंगतियों, कुरीतियों, जातिवाद, छुआछूत, लिंग भेद, क़ानून व्यवस्था, ख़ुदग़र्ज़ी, बेईमानी, चालाकी, मक़्कारी, ज़ुल्मो सितम, अपराध, बेरोजगारी, बनावटी रिश्ते, ईर्ष्या, रंजिश, नफ़रत, धार्मिक उन्माद, देश द्रोह, आंतकवाद, चोरी, हत्या, जमाखोरी, मुनाफाखोरी, रिश्वत, बालश्रम, यौन शौषण इत्यादि बुराईयों पर आसान

शब्दों और सामान्य सोच के साथ व्यंग्य करके आम आदमी को समझाने की कोशिश की गई है। क्योंकि:-

जब ज़ुबान से लफ़्ज ख़ामोश हो जाये
ख़ामोश निगाहों का फिर आवाज़ होना

मैं हर उस जीव जन्तु और हर उस जर्रे-जर्रे का बहुत आभारी हूँ जो मेरी इन संवेदनशील रचनाओं की विषय वस्तु बने हैं। उम्मीद है कि आपको ये रचनायें पसन्द आयेंगी। आशा ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्वास है कि आप अपने अनमोल विचारों से इस तुच्छ रचनाकर्मी को अवश्य अवगत करायेंगे। ताकि भविष्य में इन सुझावों पर ध्यान दिया जा सके। इन रचनाओं से अगर किसी का तन-मन, दिलो दिमाग़ आहत होता हैं तो मैं इसके लिये अग्रिम क्षमा प्रार्थी हूँ। क्योंकि:-

वैसे तो मैं चलायमान समय हूँ 'साथी'
हँसते और हँसाते गुज़रे तो आसान हूँ

इन रचनाओं को काव्य संग्रह के लायक बनाने में जो अनमोल सहयोग श्री भगवत सिंह जादौन 'मयंक', श्री भगवती प्रसाद पंचौली और श्री शम्भू दयाल विजय ने किया है उसके लिये मैं उनका बहुत-बहुत आभारी हूँ। इस मुक्तक के साथ अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

ज़माने ने पाग़ल समझ कर खारिज़ कर दिया
उनके पाग़लपन ने ही उन्हें वाज़िब कर दिया
इल्म व हुनर का एक वही तो बेताज बादशाह
जिसने वास्ते इल्म अपने को जाहिल कर दिया

तहेदिल से आपका अपना

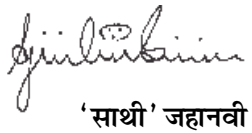

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)

सहज सरल मूर्खता

मूर्खता हमेशा
मासूम बच्चे की तरह
भोली और नादान होती है
मूर्खता पति और पत्नी,
भाई-बहन और माता-पिता के
स्वाभाविक रिश्तों की तरह
सहज और सरल होती है
मूर्खता असाधारण मनुष्यों में
दैवीय शक्ति और ईश्वर का
अनमोल वरदान होती है

इसलिए संसार के
सभी उम्र के
सभी स्त्री पुरुषों में
मूर्खता सहज और सरल
समरस, शांत और सुगम
पवित्र और निर्मल होकर
हमेशा अपने वास्तविक
आचार और विचार के साथ
सदैव स्वाभाविक और
प्राकृतिक स्वरूप में
बिना किसी मिलावट और खोट के

सदैव मूल और असली होती है
और सारे जगत में विश्वव्यापी है

मूर्खता हमेशा
पूनम के चाँद की तरह
शीतल और सुहावनी होती है
मूर्खता में कभी भी
सूर्य के प्रकाश की तरह
किसी भी प्रकार की
कोई मिलावट और
खोट नहीं होती है
मूर्खता माँ की ममता,
करुणा और स्नेह की तरह
निर्मल और पवित्र होती है
दूसरे ख़ुदग़र्ज़ रिश्तों की तरह
बनावटी और दिखावटी नहीं होती
मूर्खता हमेशा पेड़ पौधों में
हरियाली और फूलों की ख़ुश्बू बनकर
महकते गुलशन में आबाद रहती है

इसलिए संसार के
सभी उम्र के
सभी स्त्री पुरुषों में
मूर्खता सहज और सरल
समरस, शांत और सुगम
पवित्र और निर्मल होकर
हमेशा अपने वास्तविक
आचरण और विचार के साथ

सदैव स्वाभाविक और
प्राकृतिक स्वरूप में
बिना किसी मिलावट और खोट के
सदैव मूल और असली होती है
और सारे जगत में विश्वव्यापी है

मूर्खता हमेशा
सभी जीव जन्तुओं में
प्राणों की तरह
साँसें और धड़कन
बनकर रहती है
मूर्खता हमेशा के लिए
प्रकृति के पंच तत्वों की तरह
सम्पूर्ण संसार में
अजर और अमर होती है
मूर्खता तारों सितारों की तरह
दूर दराज से भी संसार में
झिल मिलाकर रोशन रहती है

इसलिए संसार के
सभी उम्र के
सभी स्त्री और पुरुषों में
मूर्खता सहज और सरल
समरस, शांत और सुगम
पवित्र और निर्मल होकर
हमेशा अपने वास्तविक
आचरण और विचार के साथ
सदैव स्वाभाविक और

प्राकृतिक स्वरूप में
बिना किसी मिलावट और खोट के
सदैव मूल और असली होती है
और सारे जगत में विश्वव्यापी है

मूर्खता हमेशा
गंगा के पानी की तरह
निर्मल और पवित्र होती है
मूर्खता हवा-पानी की तरह
सहजता से सर्व सुलभ होती है
मूर्खता फूलों में ख़ुश्बू की तरह
चारों दिशाओं में महकती रहती है
मूर्खता झील और सागर की तरह
शांत और विशाल रहती है
मूर्खता में हर वक़्त
दरिया और झरने की तरह
पानी की रफ़्तार और
रवानी हमेशा रहती है

इसलिए संसार के
सभी उम्र के
सभी स्त्री पुरुषों में
मूर्खता सहज और सरल
समरस, शांत और सुगम
पवित्र और निर्मल होकर
हमेशा अपने वास्तविक
आचरण और विचार के साथ
सदैव स्वाभाविक और

प्राकृतिक स्वरूप में
बिना किसी मिलावट और खोट के
सदैव मूल और असली होती है
और सारे जगत में विश्वव्यापी है

मूर्खता को कोई भी
शरीफ़, सच्चा, मेहनती,
ईमानदार, समझदार,
वफ़ादार, अमीर और ग़रीब
किसी भी सूरत में
बेबस और लाचार होकर भी
सख्त ज़रूरत महसूस होने पर भी
अपने लाभ और हानि के लिये भी
चुराना और नकल करना
कभी भी नहीं चाहता

इसलिए संसार के
सभी उम्र के
सभी स्त्री पुरुषों में
मूर्खता सहज और सरल
समरस, शांत और सुगम
पवित्र और निर्मल होकर
हमेशा अपने वास्तविक
आचरण और विचार के साथ
सदैव स्वाभाविक और
प्राकृतिक स्वरूप में
बिना किसी मिलावट और खोट के
सदैव मूल और असली होती है
और सारे जगत में विश्वव्यापी है

यहाँ तक की कोई भी
चोर और लुटेरा
बदनाम और बेशर्म
हैवान और शैतान
बदमाश और नालायक
हत्यारा और बलात्कारी भी
किसी भी सूरत में
ख़ुद को बेगुनाह
और अच्छा इन्सान
साबित करने के लिये भी
चुराना और नकल करना
कभी भी नहीं चाहता

इसलिए संसार के
सभी उम्र के
सभी स्त्री पुरुषों में
मूर्खता सहज और सरल
समरस, शांत और सुगम
पवित्र और निर्मल होकर
हमेशा अपने वास्तविक
आचरण और विचार के साथ
सदैव स्वाभाविक और प्राकृतिक स्वरूप में
बिना किसी मिलावट और खोट के
सदैव मूल और असली होती है
और सारे जगत में विश्वव्यापी है

ऐसा नहीं है कि
ग़रीब, अनपढ़, गँवार ही

हमेशा मूर्खता करते हैं
मगर यह बेचारे
सोच और समझकर
मूर्खता नहीं करते हैं
इसलिये इनकी मूर्खता में
वो बात और वज़्न नहीं होता है
जो की पढ़े लिखे विचारक,
दार्शनिक, दौलतमंद, वैज्ञानिक,
नेता, अभिनेता, राजनेता
और विद्वानों में होता हे
इसलिए यह सभी
बड़े और मशहूर इन्सान
अपनी मूर्खता की वजह से
मशहूर और सम्मानित पाए गये है

इसलिए संसार के
सभी उम्र के
सभी स्त्री पुरुषों में
मूर्खता सहज और सरल
समरस, शांत और सुगम
पवित्र और निर्मल होकर
हमेशा अपने वास्तविक
आचरण और विचार के साथ
सदैव स्वाभाविक और
प्राकृतिक स्वरूप में
बिना किसी मिलावट और खोट के
सदैव मूल और असली होती है
और सारे जगत में विश्वव्यापी है

मूर्खता के अन्तर्मन में
जब उपहास और व्यंग्य है तो
मूर्खता में राग, मोह, ईर्ष्या,
रंजिश और नफ़रत है
मूर्खता के अन्तर्मन में
जब हास्य और हँसी है तो
दिलो दिमाग़ में सद्भावना
और तन मन में प्रसन्नता है

इसलिए संसार के
सभी उम्र के
सभी स्त्री पुरुषों में
मूर्खता सहज और सरल
समरस, शांत और सुगम
पवित्र और निर्मल होकर
हमेशा अपने वास्तविक
आचरण और विचार के साथ
सदैव स्वाभाविक और
प्राकृतिक स्वरूप में
बिना किसी मिलावट और खोट के
सदैव मूल और असली होती है
और सारे जगत में विश्वव्यापी है

ऐसा नहीं है कि
एक माँ मूर्खता नहीं करती
मगर माँ की मूर्खता में भी
हमेशा निर्मल और पवित्र
ममता, करुणा, स्नेह

और प्यार ही होता है
माँ की ममता और करुणा में
कभी भी छल और कपट
झूठ और फ़रेब नहीं होता

माँ अपनी नालायक
संतान के लिये भी
ममता में विवश होकर
भूखी प्यासी रहने की,
अभावों में जीकर भी
अपने बच्चों को
साधन सम्पन्न करने की,
हैरान और परेशान होकर भी
सारे दु:ख और कष्ट सहन कर
संतानों को मान सम्मान देने की,
अनपढ़ और गँवार रहकर भी
संतानों को पढ़ाने, संस्कारी
और चरित्रवान बनाने की,
ख़ुद को समाज में झूठा
मानकर और बनाकर
बच्चों को सच्चा साबित करने की
मूर्खता भी सोच समझकर करती है

भले ही एक माँ
महा मूर्ख क्यों न हो
या फिर ख़ुद ही ख़ुद को
मूर्ख साबित करने की
सारी की सारी कोशिशें करे

मगर माँ की ममता
और करुणा के सामने
मूर्खता अर्थहीन और बेकार है

पति पत्नी की मूर्खता पर तो
महाभारत से भी बढ़ा
जन मानस के लिये
अति उपयोगी महाग्रन्थ
स्वाभाविक रूप से
निर्मल और पवित्र
शांत और प्रसन्नचित
सहज और सरल होकर
लिखा जा सकता है
इसलिये यह पुराण इस प्रकार है

कितना ही पढ़ा लिखा
सीधा साधा, सहज और सरल
मेहनती, निर्मल और पवित्र
बुद्धिमान और विद्वान पति भी
अपनी पत्नी की नज़रों में
हमेशा मूर्ख ही होता है
क्योंकि पति को
न चलना आता है
न पति को बोलना आता है
न पति को रहना आता है
और न ही पति को
कुछ भी खरीदना आता है

हर पत्नी को
अपने सर्वगुण सम्पन्न पति में
सारे संसार में प्रचलित
कमियाँ और बुराइयाँ
हर वक़्त नज़र आती है
मगर हर पत्नी को
दूसरी औरतों का नालायक पति भी
सीधा साधा, सहज और सरल
मेहनती, निर्मल और पवित्र
बुद्धिमान और विद्वान
और सर्वगुण सम्पन्न
नज़र आता ही नहीं
तन मन से भी बहुत
अक़्लमन्द और आज्ञाकारी लगता है

पतियों की नज़र और सोच से
अपनी पत्नी के बारे में
कुछ कहना और लिखना तो
पतियों का क़ीमती वक़्त
बर्बाद करके सरासर मूर्खता के
सिवाय कुछ भी नहीं है
क्योंकि अपनी पत्नी तो
स्वाभाविक रूप से सदैव
जन्मजात खानदानी मूर्ख ही होती है

मगर हर पति को
दूसरे की मूर्ख पत्नी भी
बहुत सुन्दर, सुशील,

आज्ञाकारी, मेहनती, ईमानदार,
बहुमुखी प्रतिभा की धनी
और भी बहुत सारे गुणों से
सर्वगुण सम्पन्न नज़र आती है

इस मोहमाया रूपी संसार में
हर पति पत्नी
एक दूसरे की नज़र में
मूर्ख ही है तो
इस समस्त जगत में
ऐसा कौन बाकि बचता है
जो मूर्ख नहीं है
क्योंकि हर स्त्री पुरुष को
एक न एक दिन तो
निश्चित रूप से ज़रूर
पति पत्नी बनना ही है

जो भी स्त्री पुरुष
मूर्खता से आबाद
पति पत्नी के मूर्ख रिश्तें में
नहीं बन्ध पाते या फिर
तलाक और मनमुटाव
और जीवन साथी की मृत्यु से
पति पत्नी नहीं रह पाते
वही स्त्री पुरुष
इस दुखिया संसार के
सबसे ख़ुश क़िस्मत और
ख़ुशहाल स्त्री पुरुष होते हैं

इस संसार के
कोई भी पति पत्नी
अपने जीवन साथी के मुँह से
यह कहलवा दे कि
वह मूर्ख नहीं है
तो वो जीवन साथी
ज़िन्दा इन्सान होकर भी
मरे हुये पशु के समान है
और पशु की कैसी दुर्गति होती है
यह मूर्ख से भी मूर्ख व्यक्ति
बहुत आसानी से
अच्छी तरह से समझता है

इसलिए संसार के सभी
स्त्री और पुरुषों में मूर्खता
सहज, सरल,शांत,सुगम,
निर्मल और पवित्र होकर
बिना किसी मिलावट और खोट के
सदैव मूल और असली होती है
और सारे जगत में विश्वव्यापी है

संताने और माता-पिता
दोनों एक दूसरे को
स्वाभाविक रूप से
महामूर्ख समझते हैं
क्योंकि उम्र के अनुसार
विचारों और अनुभव में
तालमेल नहीं होता है

छात्र पढ़ना नहीं चाहते
और शिक्षक पढ़ाना चाहते
इसलिये दोनों एक दूसरे को
स्वाभाविक रूप से महामूर्ख समझते हैं

व्यापारी और ग्राहक भी
एक दूसरे को सस्ता मंहगा
खरीद और बेचकर
स्वाभाविक मूर्ख समझते हैं

शराबी की नज़र में तो
सारी की सारी दुनिया के
वो इन्सान महामूर्ख ही होते हैं
जो ख़ुशी और ग़म
दोनों में ही शराब नहीं पीते

डाक्टर और मरीज भी
एक दूसरे की बात नहीं मानकर
बीमार होने और न होने
कम फीस लेकर और
कमीशन की दवाइयाँ
और अनावश्यक जाँच लिखकर
और परहेज की बात पर
दोनों स्वाभाविक रूप से
एक दूसरे को मूर्ख समझते हैं

गेंदबाज ख़राब गेंद पर
महान बल्लेबाज को 'आउट' कर

और अनाड़ी बल्लेबाज
अच्छी गेंद पर
चौका और छक्का मार
साधारण क्षेत्र रक्षक भी
चतुर और चालाक बल्लेबाज को
रन 'आउट' कर
आपस में एक दूसरे को
स्वाभाविक रूप से महा मूर्ख समझते हैं

पक्ष हमेशा के लिये
समझदार और ज्ञानी होता है
भले ही उसके प्रस्ताव
बेकार, अनुपयोगी, मतलबी हों
विपक्ष हमेशा के लिये
मूर्ख और अज्ञानी होता है
भले ही उसका विरोध
कितना ही जायज़ और
देशहित में उपयोगी क्यों न हो
या फिर विरोध के लिये
विरोध ही करना है
भले ही विरोध कितना ही
उचित और अनुचित क्यों न हो
आज़ादी के बाद से
संसद में यही तो
होता आ रहा है
और आगे भी होता रहेगा
जब तक यह बेबस जनता
स्वाभाविक मूर्ख बनकर ज़िन्दा रहेगी

मूर्ख होने के बहुत फ़ायदे हैं
सबसे बढ़ा फ़ायदा तो यह है कि
कोई भी आपको अक़्लमंद
और ज़िम्मेदार नहीं मान सकता
जब आप ज़िम्मेदार नहीं है तो
आप किसी कार्य के लिये
उत्तरदायी भी नहीं होते हैं
वैसे भी जितना नुकसान
ज़िम्मेदार और अक्लमंदों ने
स्वयं ख़ुद, परिवार, समाज, देश,
संसार और प्रकृति का किया है
उतना किसी मूर्ख ने नहीं किया

वैसे भी हम सब
एक दूसरे की नज़र में
मूर्ख ही तो होते हैं
क्योंकि जब भी कोई
हमारी बातों या विचारों से
सहमत नहीं होता है तो
बिना किसी दुर्भावना के
हमारे मन से अनायास ही
स्वाभाविक रूप से
सामने वाले के लिये
निश्चित रूप से यही सोचते
और विचारते की साला मूर्ख है
कुछ भी नहीं समझता है
अगर कहने की
अवस्था में होते हैं तो

उसे मूर्ख कर भी देते है
भले ही परिणाम कुछ भी हो

इसलिए संसार के
सभी उम्र के
सभी स्त्री पुरुषों में
मूर्खता सहज और सरल
समरस, शांत और सुगम
पवित्र और निर्मल होकर
हमेशा अपने वास्तविक
आचरण और विचार के साथ
सदैव स्वाभाविक और
प्राकृतिक स्वरूप में
बिना किसी मिलावट और खोट के
सदैव मूल और असली होती है
और सारे जगत में विश्वव्यापी है।

स्वाभाविक ज़िम्मेदारी

नदियों और झरनों के
निर्मल पानी को बहने
पानी को किसी भी
प्यासे की प्यास बुझाने
पेड़ को फल और छाया
और प्राणदायनी वायु देने
बादलों को पानी बरसाने

सूरज को रोज प्रकाश देने
अग्नि को स्वत: उष्मा देने
फूलों को खिलने व महकने
ईश्वर को कर्मों का फल देने
चाँद को रातों में रोज
शीतल व सुहावनी चाँदनी देने
अन्न और फलों को भी
किसी भी भूखे की भूख मिटाने
तारों को टिम टिमाकर रोशनी देने

इन सबको यह सब कुछ
करने के लिये बिल्कुल भी
इन सबसे कहना नहीं पड़ता
और न ही इन सबसे

निवेदन और आग्रह
करने की ज़रूरत नहीं पड़ती
यह सबके सब प्राकृतिक
और स्वाभाविक रूप से
स्वत: जिम्मेदारी समझकर
अपना काम सही समय पर
अच्छी तरह से करते हैं

मगर इन्सानों को
इन्सानियत, शराफ़त,
सच्चाई, सद्भावना,
ईमानदारी, दीनो-ईमान,
अपनापन, मेहनत, दान पुण्य,
नेकी व भलाई, परोपकार,
ईश्वर भक्ति, भाईचारा,
ममता और स्नेह, वफ़ा
प्यार और मुहब्बत,
शर्मो-हया,सहयोग,
आदर सत्कार, देश भक्ति
मान और सम्मान,

यह सब करने
और रखने के लिये
इन्सानों को बार बार कहने
और बहुत अधिक
समझाने पर भी
इन्सान यह सब नहीं करता
और न ही रखता है

जबकि यह सब इन्सानों की
स्वत:मानवीय ज़िम्मेदारी के साथ
स्वाभाविक और प्राकृतिक
मानवीय गुण है

मगर इन्सानों को
चोरी, ईर्ष्या, मक्कारी,
बेईमानी, हैवानीयत, ख़ुदग़र्ज़ी,
छेड़खानी, देश द्रोह, अपमान,
बलात्कार, दुर्भावना, रंजिश,
नफ़रत, जमाखोरी, जातिवाद,
रिश्वतखोरी, लड़ाई-झगड़े,
ख़ून खराबा, आंतकवाद,
बदनियत, मुनाफ़ाखोरी,
दोगलापन,चुगलखोरी,
बेशर्मी, बेइज्ज़ती, तौहीन,
भाई भतीजावाद, गद्दारी,
बेवफ़ाई, बदनामी, झूठ,
अपशब्द और जलालत

इन्सानों को यह सब
बुरे कर्म नहीं करने के लिये
बार-बार कहने और
बहुत अधिक समझाने,
आग्रह व निवेदन करने पर भी
यह सबके सब बुरे काम
बहुत आसानी और
सहजता से करता है

जबकि यह सब इन्सानों की
स्वत: मानवीय ज़िम्मेदारी के साथ
प्राकृतिक और स्वाभाविक
मानवीय प्रवृति नहीं है

यह सब बुरे कर्म करने से
इन्सानियत शर्मसार होती है
बिना इन्सानियत के इन्सान
ज़िन्दा लाश की तरह या फिर
हैवान, शैतान, ज़ालिम, दरिन्दा
और अत्याचारी की तरह होता है
इसलिये यह सब बुरे कर्म
इन्सान को शोभा नहीं देते।

पुरुषार्थ

समस्त धन सम्पदा
जैसे फल, फूल, अन्न,
पानी, तिलहन, दलहन,
सभी प्रकार के खनिज,
सभी प्रकार के मसाले,
कपास से कपड़े, रसायन,
पेट्रोल, डीज़ल, केरोसिन,
अन्य सभी प्रकार के
क़ीमती द्रव्य और पदार्थ
ज़मीन से ही निकलते हैं
इसका अर्थ यह है कि
समस्त धन सम्पदा की
देवी 'श्री लक्ष्मी'
ज़मीन में निवास करती है

उपरोक्त सभी
धन सम्पदा को
ज़मीन से
निकालने के लिये
पुरुषार्थ की
ज़रूरत होती है
इसलिये यह निष्कर्ष

निकलता है कि
धन लक्ष्मी को
प्राप्त करने के लिये
सिर्फ़ और सिर्फ़
पुरुषार्थ की ही
ज़रूरत होती है।

परमार्थ और पुरुषार्थ

नारद मुनि

मैं अपने पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये
तीनों लोकों में व्याप्त
जीव व जन्तुओं और
प्रकृति की भलाई
और संतुलन के लिये
समस्याओं का समाधान
सूचनाओं का आदान-प्रदान
हास्य और विनोद से
तन और मन को
प्रसन्नचित करने वाले
देवर्षि नारद मुनि की तरह
तन और मन से
जन सामान्य के जीवन में
उपयोगी बनकर समाहित रहूँ

वेद व्यास

मेरी ईमानदार
कोशिश है कि
मेरे पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये

गीता, महाभारत,
वेद और पुराण
जैसे ज्ञान वर्धक
और जन उपयोगी
ग्रन्थ रचित कर
मुनि वेदव्यास की तरह
तन और मन से
जन सामान्य के जीवन में
उपयोगी बनकर समाहित रहूँ

वशिष्ठ व विश्वामित्र

मैं अपने पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये
राक्षसों, असुरों, दानवों के
अन्याय और अत्याचार से
प्राणी मात्र की सुरक्षा में
आंतकियों का अन्त कर
सारी की सारी पृथ्वी में
सुख शांति करने वाले
मर्यादा पुरुषोत्तम राम
और वीर लक्ष्मण को
शिक्षित और दीक्षित
करने वाले ऋषि वशिष्ठ
और विश्वामित्र की तरह
तन और मन से
जन सामान्य के जीवन में
उपयोगी बनकर समाहित रहूँ

वाल्मीकि व तुलसी

मैं अपने पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये
आदर्श और मर्यादित
नैतिक जीवन जीकर
तन और मन को निर्मल
दिल और दिमाग़ को
पवित्र करने के लिये
रामायण और रामचरित मानस
जैसे सहज और सरल
प्राणी मात्र के लिये उपयोगी
साहित्य रचित कर
ऋषि वाल्मीकि और
संत तुलसी की तरह
तन और मन से
जन सामान्य के जीवन में
उपयोगी बनकर समाहित रहूँ

दधीचि ऋषि

मैं अपने पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये
अधर्मी राक्षसों का
वध करने के लिये
अपनी हड्डियों के वज्र के समान
अस्त्र-शस्त्र हो जाने का
शिव से वरदान प्राप्त
ऋषि दधीचि की तरह

तन और मन से
जन सामान्य के जीवन में
उपयोगी बनकर समाहित रहूँ

ऋषि दुर्वासा

मैं अपने पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये
हैवान, शैतान,अत्याचारी,
बलात्कारी, बेईमान, देशद्रोही,
ख़ुदग़र्ज़, मक्कार, चालाक,
आंतकी,दरिन्दों से मज़बूर
बेबस लाचार होकर
इनको नष्ट करने के लिये
श्राप और अभिशाप देने वाले
ऋषि दुर्वासा की तरह
तन और मन से
जन सामान्य के जीवन में
उपयोगी बन कर सामाहित रहूँ

पँच देव

मैं अपने पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये
प्राणी मात्र की सुरक्षा
प्रकृति के हर
जीव और जन्तुओं में
उचित और उपयोगी
सन्तुलन के लिये

पंच तत्व हवा, पानी,
पृथ्वी, आकाश और अग्नि को
देने वाले देवताओं की तरह
तन और मन से
जन सामान्य के जीवन में
उपयोगी बनकर समाहित रहूँ

संदीपन ऋषि

मैं अपने पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये
कर्मयोग के सिद्वान्त से
सांसारिक मोह माया के
मोह से मोक्ष और मुक्ति
अन्याय और अत्याचार से
अधर्मो को नाश करने वाले
कृष्ण को शिक्षा देने वाले
संदीपन ऋषि की तरह
तन और मन से
जन सामान्य के जीवन में
उपयोगी बनकर समाहित रहूँ

महावीर स्वामी

मैं अपने पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये
कण-कण में व्याप्त
प्राणि मात्र के लिये
सद्विचार और सद्भावना

दिगम्बर होने की हद तक
सांसारिक मोह माया के त्याग से
अंहिसा परमो धर्म के उपदेशक
महावीर स्वामी की तरह
तन और मन से
जन सामान्य के जीवन में
उपयोगी बनकर समाहित रहूँ

ब्रह्म देव

मैं अपने पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये
सृष्टि के निर्माण से
प्रकृति के कण कण में
सभी जीव और जन्तुओं में
उचित और उपयोगी
सन्तुलित योगदान देकर
सृष्टि के रचियता
ब्रह्मा की तरह
तन और मन से
जन सामान्य के जीवन में
उपयोगी बनकर समाहित रहूँ

विष्णु देव

मैं अपने पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये
सृष्टि के संरक्षण में
प्राणी मात्र को

साधन सम्पन्न करने
रोजगार और व्यापार करने
एश्वर्य और वैभव देने में
प्रकृति का पालनहार बनकर
लक्ष्मी पति विष्णु की तरह
तन और मन से
जन सामान्य के जीवन में
उपयोगी बनकर समाहित रहूँ

महादेव

मैं अपने पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये
सृष्टि की सुरक्षा में
शत्रुओं का नाश कर
बुराइयों को ख़त्म कर
विकारों का हलाहल पीकर
सत्यम् शिवम् सुन्दरम् में
प्रकृति का रक्षक बनकर
आदि देव महादेव की तरह
तन और मन से
जन सामान्य के जीवन में
उपयोगी बनकर समाहित रहूँ

महात्मा बुद्ध

मैं अपने पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये
ईर्ष्या, रंजिश,नफ़रत,

लड़ाई-झगड़े, मोहमाया के
मानसिक शारीरिक विकारों से
दिल और दिमाग़ को
निर्मल और पवित्र
सहज और सरल होकर
ज्ञान की प्राप्ति के लिये
बुद्धम् शरणम् गच्छामि की
अवधारणा साकार होने में
तथागत महात्मा बुद्ध की तरह
तन और मन से
जन सामान्य के जीवन में
उपयोगी बनकर समाहित रहूँ

गुरुनानक

मैं अपने पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये
ग़रीब तथा अमीर
दलित और सवर्ण
प्राणिमात्र में मानवता
सभी धर्मों में सद्भावना
भोजन की लंगर व्यवस्था में
सभी ग़रीब और अमीर में
समानता की अवधारण से
गुरू ग्रन्थ साहब के रचियता
गुरू नानक की तरह
तन और मन से
जन सामान्य के जीवन में
उपयोगी बनकर समाहित रहूँ

चाणक्य

मैं अपने पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये
देश की एकता-अखण्डता
राजधर्म के लिये राजनीति
कानून और न्याय व्यवस्था
राजा और प्रजा के
अधिकार और कर्तव्य
राजनीति ग्रन्थ के रचियता
आचार्य चाणक्य की तरह
तन और मन से
जन सामान्य के जीवन में
उपयोगी बनकर समाहित रहूँ

धन्वन्तरी व चरक

मैं अपने पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये
प्राणी मात्र के रोग निदान
स्वस्थ और निरोगी जीवन
उपलब्ध प्राकृतिक साधनों का
समुचित और संतुलित उपयोग
दिनचर्या और जीवन शैली के लिये
आयुर्वेद ग्रन्थ के रचियता
ऋषि धन्वन्तरी और
ऋषि चरक की तरह
तन और मन से
जन सामान्य के जीवन में
उपयोगी बनकर समाहित रहूँ

कौटिल्य

मैं अपने पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये
देश और समाज की
सामाजिक और आर्थिक
अर्थव्यवस्था को सुचारू रूप से
संचालित करने के लिये
व्यापार, लाभ और कर में
उचित आर्थिक संतुलन रखने
राजकोष का जनहित में
सामाजिक उपयोग करने में
अर्थशास्त्र के रचियता
आचार्य कौटिल्य की तरह
तन और मन से
जन सामान्य के जीवन में
उपयोगी बनकर समाहित रहूँ

परशुराम

मैं अपने पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये
धर्म की रक्षा के लिये
अधर्मी राक्षसों के आंतक
अन्याय और अत्याचार
जुल्म और सितम से
सम्पूर्ण धरती को
इक्कीस बार मुक्त करने वाले
भगवान परशुराम की तरह

तन और मन से
जन सामान्य के जीवन में
उपयोगी बनकर समाहित रहूँ

कबीर व रैदास

मैं अपने पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये
समाज की कुरूतियों
पाखण्डों की आलोचना में
समाज को मानवता की सीख
सामान्य कार्य करके भी
उच्च विचार रखने वाले
संत कबीर और रैदास की तरह
तन और मन से
जन सामान्य के जीवन में
उपयोगी बनकर समाहित रहूँ

पाणिनी

मैं अपने पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये
आसन्न, प्राणायाम, ध्यान से
तन और मन को निरोगी
शान्त और प्रसन्नचित
निर्मल और पवित्र करके
मानसिक व शाीरिक विकास में
योग साधना के जनक
ऋषि पाणिनि की तरह

तन और मन से
जन सामान्य के जीवन में
उपयोगी बनकर समाहित रहूँ

मीरा

मैं अपने पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये
ईश्वर की भक्ति
और प्रेम लगन में
राजशाही सुख सुविधायें
तन मन से त्याग कर
राजद्रोह और परिवार द्रोह की
सज़ा और कष्ट सहन कर
ज़हर का प्याला
पीने की हद तक
कृष्ण की प्रेम दीवानी
मीरा की भक्ति की तरह
तन और मन से
जन सामान्य के जीवन में
उपयोगी बनकर समाहित रहूँ

समाजसेवी

मैं अपने पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये
समाज में व्याप्त
बुराइयों और कुरूतियों को
ख़त्म करने के लिये
समाज के विकास और भलाई

नैतिक चरित्र का चिंतन
समाज की समस्याओं का
मंथन करने के लिये
समाज सुधारकों और
महापुरुषों की तरह
तन और मन से
जन सामान्य के जीवन में
उपयोगी बनकर समाहित रहूँ

सद्कर्म

मैं अपने पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये
इंसानियत, भाईचारे,
मेहनत, ईमानदारी, वफ़ा,
देश भक्ति, सद्भावना,
समरसता, सरलता, सहजता,
सच्चाई, नेकी और भलाई से
सत्यम् शिवम् सुन्दरम्
होने की क़ोशिश में
इन्सान में इन्सान की तरह
तन और मन से
जन सामान्य के जीवन में
उपयोगी बनकर समाहित रहूँ

स्वयं इन्सान

मैं अपने पुरुषार्थ से
परमार्थ के लिये

जोश और जुनून
भावना और प्रेरणा
मंगल शुभकामनाओं से
नामुमक़िन को भी मुमक़िन कर
समाज सुधारकों, महापुरुषों,
ऋषियों, देवताओं और
सर्व शक्तिमान ईश्वर को भी
प्राणी मात्र और
प्रकृति की भलाई के लिये
प्रसन्न कर सकता हूँ
कयोंकि मैं एक 'इंसान' हूँ
जो तन और मन से
जन सामान्य के जीवन में
उपयोगी बनकर
समाहित रहना चाहता हूँ।

ख़ुशहाली की जड़ें

फूल

फूलों की ख़ुशहाली
फूलों के खिलकर
और महककर
पौधों की पत्तियों
और टहनियों की
मज़बूती में नहीं है
यह तो पौधों को
खाद और पानी के
उचित पौषण से जड़ों में हैं

पेड़

पेड़ की ख़ुशहाली
पेड़ पर फल लगकर
पेड़ का विशाल होकर
छाया व प्राण वायु देना
पेड़ की पत्तियों, शाखाओं
और तने में नहीं है
यह सब तो ज़मीन में
गहरी और मज़बूत
पेड़ की जड़ों में हैं

इन्सान

इन्सान की ख़ुशहाली
इन्सान के सफ़ल
और क़ामयाब होकर
साधन सम्पन्न हो जाना
जवानी और बुढ़ापे के
पुरुषार्थ में नहीं है
इन्सान की सफलता
बचपन के संस्कारों
और यौवन में मेहनत
करने की जड़ों में हैं

वतन : एक

वतन की ख़ुशहाली
धन दौलत से लोगों के
अमीर और साधन सम्पन्न
हो जाने में नहीं है
वतन की सम्पन्नता
रोजगार व व्यापार
उद्योग धन्धों के साथ
देश के नागरिकों के
संस्कारवान, चरित्रवान,
मेहनती, ईमानदार, देशभक्त,
सही मात्रा में उचित दोहन से
प्राकृतिक संसाधनों और
खनिज की जड़ों में हैं

वतन : दो

वतन की ख़ुशहाली
ऊँची और सुन्दर ईमारतों,
चौड़ी और पक्की सड़कों,
मकानों की भव्यता और
जनता की समृद्धि में नहीं
यह तो वतन में
क़ानून और न्याय व्यवस्था,
अराजकता में सुरक्षा,
स्त्रियों और बेटियों के
बेख़ौफ़ आवागमन,
संवेदनशील नागरिक,
इन्सानियत और मेहनत,
सभी समाजों में सद्भाव,
सभी धर्मों का सत्कार,
बिजली और पानी की
आधारभूत सुविधायें,
दीन और ईमान,
सहयोग और सहकारिता,
और कुशल प्रशासन से
नागरिकों के मानवीय
विकास की जड़ों में हैं

परिवार

परिवार की ख़ुशहाली
परिवार के विशाल और
साधन सम्पन्न होकर
ज़माने में मशहूर होकर

मान और सम्मान से
नाम हो जाने में नहीं है
परिवार की ख़ुशहाली
परिवारजनों में आपसी
विश्वास, भाईचारा, प्यार
सहयोग व सद्भावना
बुजुर्गों का आदर सत्कार
एक दूसरे का मान सम्मान
रिश्तों में अपनापन
और संस्कार की जड़ों में हैं

रोजगार

रोजगार और व्यापार
की ख़ुशहाली
बेईमानी, चोरी, जमाखोरी,
मुनाफाखोरी, मिलावट से
अधिक आय करने में नहीं है
व्यापार की ख़ुशहाली तो
ग्राहकों को सन्तुष्ट कर
दीन-धर्म और ईमान से
उचित व पर्याप्त आय
प्राप्त करने की जड़ों में हैं

तन-मन

तन-मन की ख़ुशहाली
आवश्यकता से अधिक खाकर
हष्ट और पुष्ट होकर
बहारी रूप से सुन्दर, आकर्षक

और मज़बूत दिखने में नहीं है
तन-मन की सुन्दरता तो
आंतरिक रूप से
तन और मन के
सहज और सरल होने,
तन और मन के
निर्मल व पवित्र रहने,
उचित मात्रा में शुद्ध
शाकाहारी भोजन करने,
सद्भावना, सहयोग
और सद्विचार रखने,
मन की आँखों से
स्वंय और दूसरों को
सुन्दर देखने और समझने,
सकारात्मक सोच और
मधुर व्यवहार की जड़ों में हैं

ईमारत

ईमारतों की ख़ुशहाली
बाहरी रूप से दीवारों की
रंगाई और पुताई की
सुन्दरता में नहीं है
ईमारतों की ख़ुशहाली तो
मज़बूत नींव की जड़ों में हैं

मशीन

मशीन की ख़ुशहाली
रंग और रोगन से

मशीन के बाहरी रूप से
सुन्दर दिखने में नहीं है
मशीन की ख़ुशहाली तो
इन्जन और कलपुर्जों के
उचित रख-रखाव और
देखभाल की जड़ों में हैं

शिक्षक

शिक्षक की ख़ुशहाली
ज्ञान और जानकारी से
साधन सम्पन्न हो जाने,
शिक्षक के अध्यापन कौशल से
विद्यार्थी के सफल होकर
सम्पन्न रोजगार में नहीं है
शिक्षक की सफलता तो
उसके त्याग और संघर्ष से
विद्यार्थी के चरित्र निर्माण से
विद्यार्थी के रोजगार कौशल,
मेहनत और ईमानदारी,
इन्सानियत और देश भक्ति से
अच्छा और संस्कारी
नागरिक बनने की जड़ों में हैं

विद्यार्थी

विद्यार्थी की ख़ुशहाली
उच्च शिक्षित होकर
रोजगार और व्यापार से
बहुत अधिक मात्रा में

धन दौलत कमाने में नहीं है
विद्यार्थी की सफलता
अपने शिक्षक के प्रति
आदर और सत्कार
शिक्षक और शिक्षा के प्रति
समर्पण और त्याग
देश और समाज के प्रति
संस्कारवान नागरिक बनना
ज़िम्मेदारी और उत्तरदायित्व से
कर्म ही पूजा है, की जड़ों में हैं

कलाकार

कलाकार की ख़ुशहाली
मशहूर और धनवान होने
आदर-सत्कार मिल जाने
कला के गर्व और घमण्ड में
जन सामान्य से दूर हो जाने
पुरस्कार और ईनाम
मिल जाने में नहीं है
कलाकार की सफलता तो
हर रोज कला के रियाज़ से
कला में समाहित हो जाने
अपने इल्मो हुनर को सिखाने
कला में विनम्र और निर्मल,
सहज व सरल हो जाने की
पवित्र कला की जड़ों में हैं

माता-पिता

माता-पिता की ख़ुशहाली
बच्चों को पढ़ा लिखा कर
बच्चों के क़ामयाब हो जाने
बच्चों के लिये बेशुमार
धन और सम्पत्ति छोड़ जाने
परिवार और बच्चों के
साधन और सम्पन्न हो जाने
रिश्तेदारों और समाज में
परिवार और बच्चों का
नाम हो जाने में नहीं है
माता-पिता की सफलता
और बच्चों की ख़ुशहाली तो
बच्चों को संस्कारवान बनाने
बच्चों को चरित्रवान बनाने
परिवार, समाज, देश के लिये
ज़िम्मेदार और उत्तरदायी
नागरिक बनाने की जड़ो में हैं

प्रकृति : एक

प्रकृति की ख़ुशहाली
संसार में ख़ूबसूरत
अप्राकृतिक और कृत्रिम
पर्यटन स्थल हो जाने
बेशक़ीमती और सुन्दर
उपासना स्थल हो जाने
अप्राकृतिक और कृत्रिम

नदियाँ, तालाब, झील, नहरें
झरने बना देने
नकली फूल, घास, पेड़,
पौधे, जंगल से कृत्रिम
बाग बगीचे बना देने
कृत्रिम प्रकाश से रोशनी
शहरों में कृत्रिम जन्तुआलय,
पहाड़, रेगिस्तान, बर्फ़ीले स्थान,
बारिश करा देने में नहीं है

प्रकृति : दो

प्रकृति की ख़ुशहाली
संसार में ख़ूबसूरत
स्वाभाविक और प्राकृतिक
जंगल, पहाड़, नदियाँ, झील,
झरने, रेगिस्तान, बर्फिले स्थान,
सभी जीव और जन्तुओं का
स्वछन्द विचरण और भ्रमण
बादलों से प्राकृतिक बारिश,
ऋतुओं के अनुसार, सर्दी,
गर्मी, बरसात के मौसम होने
सूरज के प्रकाश से उजाला
सुहावनी चाँदनी रातें,
प्राकृतिक बाग बगीचे
प्राकृतिक फूलों की
सुन्दरता और ख़ुश्बू से
हसीन प्रकृति की जड़ों में हैं

दाम्पत्य जीवन

दाम्पत्य जीवन की ख़ुशहाली
पति और पत्नी के बीच
वैवाहिक जीवन के सम्बन्ध
और बन्धन को बेमन से निभाने
ज़िन्दा लाश की तरह से जीने
सामाजिक और पारिवारिक
लोक लाज की वजह से
एक दूसरे से अपरिचित
और अंजान बनकर रहने
एक दूसरे से गिले शिक़वे
और शक़ शिकायते करने
एक दूसरे से ईर्ष्या
रंजिश व नफ़रत से
एक साथ रहने में नहीं है

दाम्पत्य जीवन की
ख़ुशहाली और सफलता तो
पति और पत्नी के बीच
प्यार और मन से विश्वास
बुरे वक़्त में एक दूसरे का
भरोसा, सहयोग और सुरक्षा
एक दूसरे का मान सम्मान
आदर और सत्कार की भावना
परिवार व बच्चों के साथ
एक दूजे के लिये समर्पण
बुजुर्गों का आदर सत्कार
और आशीर्वाद की जड़ों में हैं।

अहसास

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन मन के सम्पूर्ण संसार

फ़कीर की दुआओं से
दिल की निर्मलता से
बदन की पवित्रता से
अजर अमर ईश्वर से

इस तरह के अहसास से
निर्मल पवित्र रहे हमारा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन मन के सम्पूर्ण संसार

सात सुर की लयताल से
सात रंगों के इंद्रधनुष से
सात वचनों की वाणी से
सात फेरों के बन्धनों से

इस तरह के जज़्बात से
अजर अमर रहे हमारा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन मन के सम्पूर्ण संसार

कायनात में सावन की हरियाली से
बसंत में महकते चमन की क्यारी से
रिम झिम बरसते बारिश के पानी से
मनमोहक पूनम की चाँदनी रातों से

इस तरह से ख़ुशगवार होकर
हर रोज़ आबाद रहे हमारा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन मन के सम्पूर्ण संसार

माँ में ममता की छाँव से
पिता की ज़िम्मेदारियों से
भाई बहन के विश्वास से
पति पत्नी के विश्वास से

इस तरह के पवित्र रिश्ते से
निर्मल रहे हमारा ख़ूबसूरत प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन मन के सम्पूर्ण संसार

अनादि संसार के वुजूद से
प्रेम दीवानों की नादानी से

बेबस औरत की अस्मत से
एक दरवेश की साधना से

इस तरह के हालात से
जियारत जैसा रहे हमारा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन मन के सम्पूर्ण संसार

दोस्ती में सब कुछ कुर्बानी से
स्वस्थ निरोगी कंचन काया से
मासूम बच्चों की मासूमियत से
कमल के फूल की सौम्यता से

इस तरह के अहसास से
निर्मल पवित्र रहे हमारा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन मन के सम्पूर्ण संसार

रंगीन-तितलियों के पंखों से
गुलाब के फूलों की रंगतों से
गर्मियों की सुहावनी सुबह से
सर्दियों में सूरज की उष्मा से

इस तरह के हसीन मौसम से
यादगार रहे हमारा हसीन प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन मन के सम्पूर्ण संसार

नीम के शजर में औषध गुण से
आँवले के अमृत बराबर फल से
बरगद की विशाल छत्रछाया से
पीपल के शजर की पवित्रता से

इस तरह की उपयोगिता से
अजर और अमर रहे हमारा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन मन के सम्पूर्ण संसार

मेहनत व ईमानदारी के व्यापार से
मालिक और नौकर की ज़रूरत से
अदालतों में बेगुनाही के सबूतों से
कुबेर के धन दौलत के ख़ज़ाने से

इस तरह की इन्सानियत से
हमेशा सदाबहार रहे हमारा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन मन के सम्पूर्ण संसार

सरहद पे जान की कुर्बानी से
झाँसी की रानी में बहादुरी से
चतुर शिवाजी की चालाकी से
महाराणा प्रताप की वीरता से

इस तरह की हिफ़ाज़त से
हमेशा महफूज़ रहे हमारा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन मन के सम्पूर्ण संसार

तुलसी की पूजा-प्रार्थना से
ब्रह्माजी के सृष्टि निर्माण से
शिव की बेलगाम साधना से
पार्वती की तप व तपस्या से

इस तरह की पवित्रता से
तीर्थ-यात्रा रहे हमारा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन मन के सम्पूर्ण संसार

साधु सन्तों की आराधना से
अर्जुन के तीर में निशान से
युधिष्ठर के धर्म व न्याय से
माँ पन्नाधाय की कुर्बानी से

इस तरह की अक़ीदत से
हमेशा इबादत रहे हमारा प्यार

ओह! मेरे मधुर प्यार
तन मन के सम्पूर्ण संसार

देवी सीता के सतीत्व से
द्रौपदी के कठोर प्रण से
रावण की हठ धर्मिता से
ध्रुव में बेख़ौफ़ आस्था से

इस तरह की प्रतिज्ञा से
अजर अमर रहे हमारा प्यार।

करुणा और स्नेह

मैं मानसिक रूप से
इतनी सक्षम नहीं हूँ
न ही शारीरिक रूप से
इतनी मज़बूत हूँ कि
विशाल साम्राज्य पर
ज़बरन कब्ज़ा कर
उसे तानाशाही और
ज़ुल्मो सितम से चला सकूँ

मैं तो एक औरत हूँ
मगर मेरा हृदय
इतना विशाल है कि
उसमें करुणा, दया, ममता,
स्नेह, प्रेम, प्यार, मुहब्बत,
सहयोग, सद्भावना, सहनशीलता
सरलता, सहजता, समरसता,
निर्मलता और पवित्रता
इतनी है कि
सारे संसार को
एक परिवार समझकर
परिवार के हर सदस्य की
सारी ज़रूरतों को पूरा करके

हर सदस्य को संतुष्ट करके
सबका मन जीत करके
और उनका हृदय परिवर्तन करके
सारे संसार में ख़ुशियाँ,
सुक़ून, अम्न और चैन,
भाईचारे की समझदारी से
ईर्ष्या, रंजिश, नफ़रत, दुश्मनी,
आंतकवाद, जातिवाद, अमीरी, ग़रीबी,
बलात्कार, भ्रष्टाचार, झगड़ों से
जर्जर और बदहाल इस संसार को
ख़ूबसूरत महकते गुलशन की तरह
हरा भरा आबाद कर सकती हूँ
क्योंकि मैं एक औरत के रूप में
माँ, पत्नी, बहन, बेटी, दोस्त बनकर
ममता, करुणा और सहनशीलता हूँ

क्योंकि मैं एक औरत के रूप में
माँ, पत्नी, बहन, बेटी, दोस्त बनकर
ममता, करुणा और सहनशीलता हूँ।

माँ का मज़हब

मैं सीता से
सुल्ताना बना दी गई
क्योंकि मैं पराये देश में
बेबस और लाचार थी
ज़िन्दा रहने के लिये
मैंने निकाह भी
कुबूल कर लिया
परिवार की ज़रूरतों
और काम वासना को
पूरा करने के लिये
मुझे बेमन से
मेरे तन को
स्वीकार भी कर लिया गया
कुनबा बढ़ाने के लिये
मैं तीन बच्चों की
माँ बना दी गई
तीनों बच्चों को मैंने
अपने आँचल का
दूध पिला कर
पाल पौष कर
बड़ा भी कर दिया
इन तीन बच्चों को

माँ की ममता का
भरपूर प्यार और स्नेह दिया
क्योंकि पहले मैं
एक माँ की ममता,
करुणा और सहनशीलता थी
बाद में मेरा मज़हब था
अगर मेरा कोई मज़हब था तो

मैं फिर सुल्ताना से
सीता बना दी गई
मुझे मेरे तीन बच्चों से
जुदा कर दिया गया
जिनको मैंने
अपनी कोख में
नौ महीने तक
पाल पोष कर
बढ़ा किया था
मेरी बेबस और लाचार
माँ की ममता ने
तड़प-तड़प कर
रो-रोकर
बेहाल होकर
दम तोड़ दिया
क्या माँ की ममता का
कोई भी मज़हब नहीं होता

सीता के मज़हब में
परिवार की जरूरतों

और काम वासना को
पूरा करने के लिये
मुझे बेमन से
मेरे तन को
स्वीकार भी कर लिया गया
कुनबा बढ़ाने के लिये
मैं फिर से
दो बच्चों की
माँ बना दी गई
इन दोनों बच्चों को भी मैंने
अपने आँचल का
दूध पिला कर
पाल पौष कर
बड़ा भी कर दिया
इन बच्चों को भी
मैनें माँ की ममता का
भरपूर प्यार और स्नेह दिया
क्योंकि पहले मैं
माँ की ममता और करुणा थी
बाद में मेरा मज़हब था
अगर कोई था तो
क्या सीता के मज़हब में भी
माँ की ममता और करुणा का
कोई भी मज़हब नहीं था

क़ुदरत और ईश्वर का
ऐसा करिश्मा हुआ कि
वक़्त ने

मेरे पाँचों बच्चों को
एक साथ मिला दिया
आख़िर में
माँ की ममता जीत गई
जुदा-जुदा
सीता और सुल्ताना
करुणा, ममता, स्नेह,
वात्सल्य और प्यार से
सिर्फ़ एक माँ हो गई
जिसका सिर्फ़
एक ही मज़हब हो गया
वो था सिर्फ़ और सिर्फ़
माँ की ममता और करुणा

जुदा-जुदा
सीता और सुल्ताना
करुणा, ममता, स्नेह,
वात्सल्य और प्यार से
सिर्फ़ एक माँ हो गई
जिसका सिर्फ़
एक ही मज़हब हो गया
वो था सिर्फ़ और सिर्फ़
माँ की ममता और करुणा।

अपनी अपनी औक़ात

क़ुदरत

क़ुदरत के साथ छेड़ख़ानी करके
क़ुदरत के नियमों के विपरीत
जीवन जीने लग जाओ तो
हसीन और ख़ूबसूरत क़ुदरत भी
अपनी औक़ात पर आकर
आँधी तूफ़ान, ऋतु चक्र में परिवर्तन
और बेमौसम की बारिश से
संसार को तबाह कर देती है

धरती माँ

धरती माता के साथ
नाजायज़ छेड़ख़ानी करके
अत्यधिक दौहन से शौषण
और ज़ुल्मो सितम करो तो
जगत जननी धरती माता भी
अपनी औक़ात पर आकर
भूकम्प और ज्वालामुखी से
संसार को तबाह कर देती है

पेड़-पौधे

पेड़ और पौधों के साथ
बेरहम छेड़खानी करके
पेड़ और पौधों पर
ज़ुल्म और सितम करके
पानी और ज़मीन का
उचित पोषण न दे तो
पेड़ और पौधे भी
अपनी औक़ात पर आकर
फल, छाया, लकड़ी, सुन्दरता,
ख़ुश्बू और वायु नहीं देकर
जीव और जन्तुओं का जीवन
तबाह करके मौत में बदल देते हैं

पानी

दरिया, झील और झरनों की
रवानी के साथ छेड़खानी करके
प्रदूषण के अत्याचार से
दरिया, झील और झरनों के साथ
अन्याय और अत्याचार करो तो
दरिया, झील और झरने भी
अपनी औक़ात पर आकर
जीव और जन्तुओं को प्यास से
तड़प तड़प कर बेहाल करके
मरने के लिये मज़बूर कर देते है
या फिर विशाल समन्दर को
पानी का पोषण नहीं देकर
सूखने के लिये मज़बूर करके

क़ुदरत के तीन चौथाई
जीव और जन्तुओं का जीवन
तबाह करके नष्ट कर देते हैं

समय

अगर हम अनमोल समय का
महत्त्व और मूल्य नहीं समझें
और समय को बर्बाद करें तो
समय भी अपनी औक़ात पर आकर
इन्सान का जीवन तबाह कर देता है

समाज

अगर हम समाज के रीति रिवाज
और नियमों का पालन नहीं करें तो
समाज भी अपनी औक़ात पर आकर
हमारा सामाजिक बहिष्कार करके
हमारा जीना मुश्किल कर देता है

सूरज

सूरज नाराज होकर
अपनी औक़ात पर
जब आ जाये तो
दिन के प्रकाश को
अन्धकार में बदल कर
सभी जीव जन्तुओं की
दिनचर्या को
अस्त-व्यस्त कर

प्रकृति के सन्तुलन को
तहस नहस करके
प्राणी मात्र का जीवन
नष्ट कर देता है
क्योंकि सूरज की उष्मा के
वाष्पीकरण से पानी बनता है
और बिना पानी के
जीवन की कल्पना भी
मुमक़िन नहीं हो सकती है

चन्द्रमा

चाँद नाराज होकर
अपनी औक़ात पर
जब आ जाये तो
लाखों चराग़ों से भी
बेहतर रोशनी और प्रकाश
अन्धेरी काली रातों में
अपनी शीतल रोशनी
संसार को नहीं देकर
वक़्त बेवक़्त की ज़रूरत पर
जीव जन्तुओं का जीवन
बेहद मुश्क़िल कर देता है

ग्रह नक्षत्र

ग्रह नक्षत्र नाराज होकर
अपनी औक़ात पर
जब आ जाये तो
अपनी निर्धारित गति में

मन मुताबिक परिवर्तन से
ब्रह्माण्ड के सन्तुलन को
अस्त व्यस्त करके
पंच तत्वों के बिना
प्राणी मात्र का जीवन
तहस नहस करके
नामुमक़िन कर देते हैं

ईश्वर

अगर हम ईश्वर की शक्ति
और वजूद से इन्कार करके
पाप पुण्य का नहीं सोचें
धर्म का साथ नहीं देकर
अधर्म और अन्याय करें तो
रहम दिल और सबका दाता
परम पिता परमेश्वर भी
अपनी औक़ात पर आकर
हमारे बुरे कर्मों का फल देकर
हमारा ख़ुशहाल जीवन
नर्क से भी बदतर कर देता है

सन्तान

अगर हम अपनी सन्तान की
सुख और सुविधाओं का
समुचित ध्यान नहीं रखें
सन्तानों को उनकी
मनमर्जी नहीं करने दे तो
जान से भी ज्यादा प्यारी

इकलौती सन्तान भी
अपनी औक़ात पर आकर
बदतमीजी और दुर्व्यवहार करके
परिवार का सुख और चैन
नर्क से भी बदतर कर देती है

पति-पत्नी

अगर पति और पत्नी
एक दूसरे की ज़रूरत नहीं हो
एक दूसरे के स्वार्थ और
सुविधा को पूरा नहीं करें तो
पति और पत्नी भी
अपनी औक़ात पर आकर
सात फेरों के सात वचनों से
सात जन्मों का रिश्ता भी
ख़ुदग़र्ज़ी में तलाक लेकर
एक दूसरे का जीवन
और भविष्य बर्बाद कर देते हैं

वतन

अगर हम वतन के क़ानून,
नियमों और संस्कारों को नहीं माने
और बेवफ़ाई व गद्दारी करें तो
हमारा अपना वतन भी
अपनी औक़ात पर आकर
देश द्रोह के आरोप में सज़ा देकर
हमारी नागरिकता को ख़त्म कर
हमें दर-दर भटकने के लिये
मज़बूर और विवश कर देता है

भाई-बहन

अगर हम भाई बहनों की
सुख और सुविधाओं का
उचित खयाल नहीं रखें
उनकी बातें और विचारों से
दिल से सहमत नहीं हों
भाई और बहनों को
अपनी मनमर्जी नहीं करने दें तो
भाई और बहन भी
अपनी औक़ात पर आकर
दूध और ख़ून का
रिश्ता भी तोड़ लेते हैं

दोस्त-रिश्तेदार

अगर हम खास दोस्तों
और खास रिश्तेदारों का
उचित आदर सत्कार नहीं करें
दोस्तों और रिश्तेदारों का
उचित मान सम्मान नहीं करें
उनकी सुख सुविधाओं का
उचित ध्यान नहीं रखें
उनकी मर्जी और सुविधा से
रिश्ते को नहीं निभायें
उनको समय समय पर
उचित उपहार नहीं दें
उनके ख़ुदगर्ज़ विचारों से
सहमत नहीं हो तो

ख़ास रिश्तेदार और दोस्त भी
अपनी औक़ात पर आकर
ख़ास और ज़रूरतमन्द
रिश्ता भी तोड़ देते हैं

पिता

अगर हम पिता की
उम्मीदों पर खरा नहीं उतरें
पिता का कहना नहीं मानें
पिता से बदज़ुबानी करें
अपने बुरे कर्मों से
पिता को बदनाम करें तो
सिर्फ़ और सिर्फ़ बच्चों के लिये
जीने वाला ज़िम्मेदार पिता भी
अपनी औक़ात पर आकर
अपने नाम और सम्पत्ति से
सन्तान को बेदखल करके
ख़ून का रिश्ता भी तोड़ लेते हैं

माँ

इस सम्पूर्ण संसार में
सिर्फ़ और सिर्फ़
इकलौती माँ ही होती है
माँ के साथ कितना भी
बुरा व्यवहार करो
कितने भी दुख और कष्ट दो
भले ही माँ को

भूखा और प्यासा रखो
भले ही माँ को
सम्पत्ति से बेदखल कर दो
माँ की रोजी रोटी छीन लो
माँ सब कुछ बर्दाश्त करती है
मगर माँ कभी भी
अपनी औक़ात पर नहीं आती

माँ किसी भी रूप में
परिवार और सन्तानों का
बुरा करना तो
बहुत दूर की बात है
बुरा सोच भी नहीं सकती
क्योंकि माँ की ममता
सहनशीलता, करुणा,
स्नेह और प्रेम की देवी है
जो कितने भी बुरे हालात हों
माँ औरों की तरह
अपनी औक़ात पर आकर
कैसे भी बुरे हालात
और कठिन परिस्थितियों में
निर्दय, बेवफा, हैवान,
और शैतान होकर
नालायक सन्तानों का भी
बुरा नहीं कर सकती
इसलिये दयालू माँ के
पवित्र श्री चरणों में
स्वर्ग और ईश्वर का निवास है।

अपनी अपनी दास्तान

पाग़ल

हम पाग़ल हैं
हम से पूछो
हम कैसे पाग़ल हुये
हमने क्या-क्या
न सहा होगा
हमने कैसे-कैसे
ज़ुल्म सहे होंगे
हमने कितने सदमे
बर्दाश्त किये होंगे
हमने कैसे-कैसे
अत्याचार सहन किये होंगे

हमने कैसी-कैसी बेवफ़ाई
मुहब्बत और रिश्तों में
वफ़ादार होकर देखी होगी
हमने कैसी-कैसी
ख़ुदगर्ज़ी, बेईमानी, मक्कारी
चालाकी, फ़रेब और धोखे
वक़्त बेवक़्त जीवन में
बर्दाश्त किये होंगे कि
हम अपना मानसिक व

दिमाग़ी सन्तुलन खोकर
पाग़ल हो गये
अगर हम पाग़ल
यह सब कुछ बता दे तो
आम इन्सान का
कलेजा फट जाये
या फिर आम इन्सान भी
हमारी तरह पाग़ल हो जाये

स्त्री

हम औरतें हैं
दुनिया में हमारी
आधी आबादी है
फिर भी हम
दोयम दर्जे का
बुरा व्यवहार सहन करती हैं
हमारे बिना पुरुष का
जीना मुश्क़िल ही नहीं
नामुमक़िन है
फिर भी हम औरतों का
भविष्य अन्धकार में होता है
ख़ुदगर्ज़ मक्कार पुरुष
अपने स्वार्थ और फायदे के लिये
वक़्त बेवक़्त पर
हमारा उपयोग करता है
शैतान पुरुष
हम औरतों को
सम्पत्ति की तरह मानकर

हमारे तन और मन पर
पूर्ण अधिकार रखता है
हम औरतों की
पुरुष प्रदान समाज में
उतनी अहमियत नहीं
जितना हमारा योगदान है
हम बिना वेतन के
बन्धुआ मज़दूरों की तरह
घर परिवार के लिये
चौबीस घन्टों की नौकर हैं
हम लाचार औरतें
इतनी असुरक्षित रहती हैं कि
हवस के भूखे भेड़िये इन्सान
हमें नोंच-नोंच कर
बुरी नज़रों से
खा जाना चाहते हैं

भिखारी

हम ऐसे भिखारी हैं
जो शारीरिक, मानसिक
और आर्थिक दृष्टि से
बेसहारा और जर्जर होकर
सर्दी, गर्मी और बरसात में
खुले आसमान के नीचे
गन्दे फुटपाथ पर
जीवन यापन करते हैं
हमें मालूम है कि
हमें ज़िन्दा रहने के लिये

जो भीख मिलती है
उसके लिये हमें
कितनी तौहीन व ज़लालत
सहन करनी पड़ती है
जो भी इन्सान
हमारी मज़बूरी पर
तिरस्कार से तरस खा कर
हमें जो भी
थोड़ी बहुत भीख देते हैं
वो ऐसे अहसान जताते हैं कि
उन्होंने हमें बहुत कुछ दे दिया है
हम भिखारियों को
यह भी मालूम है कि
भीख माँगना
मौत से भी बदतर है
फिर भी हम भिखारी
हर रोज मर मर कर
जीने के लिये विवश हैं

ईमानदारी

हम ईमानदार हैं
हम से पूछो
हमें ईमानदारी की
कितनी बड़ी क़ीमत
चुकानी पड़ती है
हमें जायज़ ज़रूरतों को
पूरा करने के लिये भी
हज़ार बार सोचना पड़ता है

बदहाली और तंगहाली में
हमारी गुज़र बसर होती है
हमें परिवार की
जायज़ ख़ुशियों का
गला घोटना पड़ता है
बेईमान और भ्रष्टाचारी
हमारी दुर्दशा पर
बेरहम ताने सुनाकर
हमारा शराफ़त से जीना
मुश्क़िल कर देते हैं
अक़्सर इस वज़ह से
हम ईमानदार इन्सान
ख़ुदकुशी कर लेते हैं
कुछ ईमानदार इन्सान
इस विश्वास के साथ
तड़प-तड़प कर
जीते रहते हैं कि
सच परेशान हो सकता है
पराजित नहीं हो सकता
मगर यह विश्वास
कभी हक़ीकत में नहीं बदलता

ग़रीब

हम ग़रीब हैं
हम से पूछो
ग़रीब होने की
सज़ा क्या होती है
दौलतमन्द, सेठ, साहूकार

दौलत के नशे में चूर
हमें बन्धुआ मज़दूर बनाकर
हमारे साथ भिखारियों
और जानवरों के जैसा
दुर्व्यवहार करते हैं
हमारी शराफ़त का
नाजायज़ फायदा उठाकर
हमें तड़प-तड़पकर
जीने के लिये मज़बूर कर देते हैं
दैनिक जीवन में रोजमर्रा की
सामान्य ज़रूरी आवश्यकतायें भी
इज़्जत आबरू और मान सम्मान
गिरवी रखकर पूरी करनी पड़ती है
रोजी रोटी की फ़िक्र में
ख़ुशियाँ का जश्न मनाना तो
बहुत दूर की बात है
हम ग़म और मौत का मातम भी
सही तरह से नहीं कर सकते

चोर व हत्यारे

हम चोर, डाकू और हत्यारे हैं
हम से यह सब पूछो कि
हम सामान्य इन्सान से
ऐसे ख़तरनाक और बुरे
इन्सान कैसे हो गये
हमने ज़माने के कितने
जुल्मो सितम, रंजिश और
नफ़रत सहन किये होंगे कि

हमने मज़बूर होकर के
रोजी रोटी के लिये
इतना बुरा पेशा अपनाया
या फिर प्रतिशोध की आग में
जलकर इतने बुरे इन्सान हो गये

दलित

हम दलित हैं
हमसे यह सब पूछो कि
दलित होने का दर्द क्या होता है
छुआछूत और भेदभाव से
हमारे साथ ऐसा बुरा
व्यवहार किया जाता है कि
हमारा तन और मन
हमारा दिल और दिमाग़
मानसिक और शारीरिक वेदना से
हैरान और परेशान होकर
हम जख़्मी हो जाते हैं
जब इन्सान का जन्म
उसके हाथ में नहीं है तो
फिर दलित के घर में
जन्म लेने से ही
क्या हम दलित हो गये
क्या कर्म के अनुसार
जाति की वर्ण व्यवस्था
समाज में नहीं होनी चाहिये

मज़दूर

हम दिहाड़ी मज़दूर हैं
हम से यह सब पूछो कि
दिहाड़ी मज़दूर होने का
दर्द और ग़म क्या होता है
दो वक़्त की रूखी सूखी
रोजी रोटी के लिये भी
भूख प्यास से पेट काटकर
घर और परिवार छोड़कर
शहरों में खुले आसमान के नीचे
बेरहम सर्दी गर्मी बरसात
हमें व्यस्त फुटपाथों पर
तीर जैसे ताने सुन सुनकर
ज़िन्दगी गुज़ारनी पड़ती है
बेरोजगारी की चक्की में पिसकर
हम पापी पेट के लिये
बहुत कम वेतन पर भी
काम करने के लिये विवश होते हैं।

बेगुनाह बदनसीब क़ैदी

पिता

जेल की सलाख़ों के पीछे
मैं ऐसा बेगुनाह और बदनसीब
बेबस और मज़बूर गुनहगार क़ैदी हूँ
जिस पर उसकी बेटी ने ही
बलात्कार करने और अस्मत का
सौदा करने का इल्ज़ाम लगाया है
ताकि वह अपने दोस्तों के साथ
मेरी गैर मौजूदगी में
आवारागर्दी और मौज़ मस्ती कर सके

पति

जेल की सलाख़ों के पीछे
मैं ऐसा बेगुनाह और बदनसीब
बेबस और मज़बूर गुनहगार क़ैदी हूँ
जिस पर उसकी पत्नी ने ही
नपुंसक होने का इल्ज़ाम लगाया है
ताकि वह पराये पुरुष के साथ
नाजायज़ सम्बन्धों को
समाज में जायज़ बना सके

सवर्ण जाति

जेल की सलाख़ों के पीछे
मैं जातिवाद का शिकार
सवर्ण वर्ग का बेबस बेगुनाह
और बदनसीब गुनहगार क़ैदी हूँ
जिस पर ईर्ष्या, रंजिश और
नफ़रत से बदले की भावना में
छूआछूत और भेदभाव के
अनैतिक और झूठे आरोप हैं
जबकि मैं सभी जातियों
और धर्मों के प्रति
सद्भावना और सहयोग रखता हूँ

चरित्र

जेल की सलाख़ों के पीछे
छेड़खानी के आरोप में
बदनसीब और बेगुनाह
बेबस और मज़बूर गुनहगार क़ैदी हूँ
जिस पर बदचलन महिला द्वारा
ब्लैकमेल करने की दुर्भावना में
बुरी नज़र और नापाक़ इरादों से
छेड़खानी के झूठे आरोप से
सज़ायाप्ता बेगुनाह क़ैदी हूँ
जबकि मुझे तन मन से
सुन्दर और सुशील पत्नी का
भरपूर प्यार मिलता है
जिससे मैं तन मन से
सम्पूर्ण रूप से सन्तुष्ठ हूँ

दुश्मन देश

जेल की सलाख़ों के पीछे
मैं ऐसा बेगुनाह और बदनसीब
बेबस और मज़बूर गुनहगार क़ैदी हूँ
जो पशु चराते हुये रास्ता भटक कर
पड़ौसी दुश्मन मुल्क की
जेल में कई सालों से
जासूसी के झूठे आरोप में
बिना सुबूतों के क़ैद हूँ
जो रंजिश और नफ़रत में
हैवानीयत की हद से भी
ज्यादा गुज़र चुकी
शारीरिक और मानसिक
बेरहम यातनाओं से
अपना दिमाग़ी सन्तुलन खोकर
आधा भूखा प्यासा रहकर
हर पल तड़प-तड़पकर
सज़ा-ए-मौत के इन्तज़ार में
मरने के लिये बेबस और लाचार हूँ

ईमानदार

जेल की सलाख़ों के पीछे
मैं ऐसा बेगुनाह और बदनसीब
बेबस और मज़बूर होकर
शर्म से पानी पानी होकर
अपनी इज़्जत मिट्टी में मिलाकर
संगीन गुनहगार क़ैदी हूँ
जो अपनी मेहनत और ईमानदारी से

ज़लील होकर सज़ा भुगत रहा हूँ
जिसे अपने ही ऑफिस के
सहयोगी कर्मचारियों ने
झूठी रिश्वत, झूठे गबन
और रंजिश की ज़ालसाजी के
बेबुनियाद आरोप में फँसाया है
ताकि सब सहयोगी कर्मचारी
ग़लत और अनैतिक काम करके
सरकारी कोष और सुविधाओं का
मनमर्जी से दुरूपयोग कर
अपना निजी फ़ायदा कर सके
या आसानी से रिश्वत लेकर
सबके सब मौज़ मस्ती कर सके

ख़ुशहाली

जेल की सलाख़ों के पीछे
छेड़खानी के आरोप में
ऐसा बदनसीब और बेगुनाह
बेबस और मज़बूर
शर्म से पानी पानी होकर
अपनी इज़्जत मिट्टी में मिलाकर
चरित्रहीन गुनहगार क़ैदी हूँ
जिस पर ईर्ष्या, जलन,
रंजिश और नफ़रत में
अपनी सहकर्मी और पड़ौसन ने
छेड़खानी का इल्ज़ाम लगाया है
ताकि वो मेरी तरक्की
और ख़ुशहाली का बदला ले सके

ससुर

जेल की सलाख़ों के पीछे
छेड़खानी व दहेज के आरोप में
ऐसा बदनसीब और बेगुनाह
बेबस और मज़बूर
शर्म से पानी पानी होकर
अपनी इज़्जत मिट्टी में मिलाकर
साधन सम्पन्न गुनहगार क़ैदी हूँ
जिस पर अपनी बहू ने
इल्ज़ाम लगाया है कि
मैंने दहेज के लिये मज़बूर कर
और अस्मत से छेड़खानी करके
मानसिक और शारीरिक रूप से
उसको प्रताड़ित किया है
ताकि वह ससुराल में
अपनी मनमानी कर सके
जबकि मैंने स्वेच्छा से
दहेज देने के प्रस्ताव को
अस्वीकार कर दिया था

भाई

जेल की सलाख़ों के पीछे
ऐसे बदनसीब और बेगुनाह
बेबस और मज़बूर
शर्म से पानी पानी होकर
अपनी इज़्जत मिट्टी में मिलाकर
भाई के रूप में गुनहगार क़ैदी हूँ

जिस पर अपने छोटे भाई ने
उसके हिस्से की सम्पत्ति
हड़पने का संगीन इल्ज़ाम है
जबकि मैंने मेरे छोटे भाई को
अपने बच्चे की तरह
पाल पोषकर बड़ा कर
उसे अपने पैरों पर खड़ा कर
खाने कमाने लायक बनाया है

भाई

जेल की सलाख़ों के पीछे
ऐसा बदनसीब और बेगुनाह
बेबस और मज़बूर
ख़ुदगर्ज़ भाई के रूप में
शर्म से पानी पानी होकर
अपनी इज़्जत मिट्टी में मिलाकर
संगीन गुनहगार क़ैदी हूँ
जिस पर अपनी
साधन सम्पन्न बहनों ने
इल्जाम लगाया है कि मैं
शादी के बाद उनको
तीज त्यौहारों और
पारिवारिक कार्यक्रमों में
उचित रूप से नहीं मानकर
उनको मान सम्मान नहीं देता
ताकि वो पैतृक सम्पत्ति में
अपना हिस्सा माँग सके

पिता

जेल की सलाख़ों के पीछे
ऐसा बदनसीब और बेगुनाह
बेबस और मज़बूर
पिता के रूप में
शर्म से पानी पानी होकर
अपनी इज़्जत मिट्टी में मिलाकर
संगीन गुनहगार क़ैदी हूँ
जिस पर अपनी सन्तानों ने ही
बेरहम और तानाशाह होने का
बेबुनियाद इल्जाम लगाया है
जो पारिवारिक, सामाजिक,
सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक
रिति रिवाजों, परम्पराओं
और अनुशासन के नाम पर
उनका शारीरिक और
मानसिक शौषण कर
उन पर अत्याचार करता हूँ
ताकि वो मनमर्जी करके
घर और परिवार का
वातावरण खराब कर सके

दोस्त

जेल की सलाख़ों के पीछे
ऐसा बदनसीब और बेगुनाह
बेबस और मज़बूर
बेईमान दोस्त के रूप में

शर्म से पानी पानी होकर
अपनी इज़्जत मिट्टी में मिलाकर
संगीन गुनहगार क़ैदी हूँ
मुझ पर मेरे दोस्तों का
संगीन बेबुनियाद इल्जाम है कि
मैंने उनके वो चन्द हज़ार
रुपये नहीं लौटाये
जो उन्होंने मुझे
कभी उधार नहीं दिये थे
जबकि मैंने समय समय पर
दोस्तों की आर्थिक और शारीरिक मदद की
भले ही मैं ख़ुद तंगहाली में जिया
और अपने परिवार से बुरा बना

नियोक्ता

जेल की सलाख़ों के पीछे
ऐसा बदनसीब और बेगुनाह
बेबस और मज़बूर
कंजूस और शै तान
नियोक्ता के रूप में
शर्म से पानी पानी होकर
अपनी इज़्जत मिट्टी में मिलाकर
संगीन गुनहगार क़ैदी हूँ
जिस पर अपने ही
नालायक कर्मचारियों का
यह संगीन इल्ज़ाम है कि
मैं उनका शारीरिक,आर्थिक
और मानसिक शौषण कर

उन पर जुल्मो सितम करता हूँ
ताकि वो मेरे रोजगार
और व्यापार को बर्बाद कर सके
जबकि मैं समय समय पर
कर्मचारियों की हर तरह से
मदद करता रहता हूँ

समाज सेवी

जेल की सलाख़ों के पीछे
ऐसा बदनसीब और बेगुनाह
बेबस और मज़बूर
समाज सेवी के रूप में
शर्म से पानी पानी होकर
अपनी इज्जत मिट्टी में मिलाकर
संगीन गुनहगार क़ैदी हूँ
मुझ पर मेरे ही
समाज बन्धुओं का
बेबुनियाद इल्ज़ाम है कि
मैनें समाज के नाम का
अनुचित उपयोग किया है
और अपने समाज को
आर्थिक गबन कर नुकसान पहुँचाया है
जबकि मैंने समाज की
समय समय पर
तन मन धन से बहुत सेवा की
जिसकी वजह से मुझे
सामाजिक कार्य करने से
हर तरफ से नुकसान उठाना पड़ा

शिक्षक

जेल की सलाख़ों के पीछे
ऐसा बदनसीब और बेगुनाह
बेबस और मज़बूर
शिक्षक के रूप में
शर्म से पानी पानी होकर
अपनी इज्जत मिट्टी में मिलाकर
संगीन गुनहगार क़ैदी हूँ
मुझ पर मेरे अपने ही
नालायक, संस्कार हीन
और आवारा शिष्यों ने
मेरी अज्ञानता और लापरवाही का
बेबुनियाद इल्ज़ाम लगाया है
ताकि वह अपनी असफलता का
दोष मुझे दे सके, जबकि मैंने
पूरी मेहनत और ईमानदारी से
अध्यापन कार्य किया है
जबकि मेरे बहुत सारे संस्कारी,
समझदार और होनहार शिष्य
उच्चस्थ पदों पर कार्यरत रहकर
और साधन सम्पन्न व्यापार कर
मेरा नाम रोशन कर रहे हैं

चिकित्सक

जेल की सलाख़ों के पीछे
ऐसा बदनसीब और बेगुनाह
बेबस और मज़बूर
चिकित्सक के रूप में

शर्म से पानी पानी होकर
अपनी इज़्जत मिट्टी में मिलाकर
संगीन गुनहगार क़ैदी हूँ
मुझ पर मेरे अपने ही
गम्भीर बीमारी और दुर्घटना में
दम तोड़ते मरीजों
और उनके परिजनों ने
ईलाज में लापरवाही बरतकर
मरीज की मौत का
संगीन इल्ज़ाम लगाया है
जबकि मैंने पूरी मेहनत, ज्ञान,
निष्ठा और ईमानदारी से
मरीज का ईलाज किया है
वैसे भी किसी इन्सान का
जीना और मरना
किसी के भी वश में नहीं होता है

वकील

जेल की सलाख़ों के पीछे
ऐसा बदनसीब और बेगुनाह
बेबस और मज़बूर
वकील के रूप में
शर्म से पानी पानी होकर
अपनी इज़्जत मिट्टी में मिलाकर
संगीन गुनहगार क़ैदी हूँ
मुझ पर मेरे अपने ही
ऐसे मुवक्किलों ने बेबुनियाद
इल्ज़ाम लगाया है जिन पर

संगीन जुर्म, सरेआम क़त्ल
और मासूम नाबालिग से
सामूहिक बलात्कार के आरोप हैं
और इनके खिलाफ पर्याप्त सुबूत हैं
जबकि मैंने अपने ज़मीर को
बेरहमी से मारकर भी
इनकी ईमानदारी,मेहनत
और लगन से पैरवी की थी

व्यापारी

जेल की सलाख़ों के पीछे
ऐसा बदनसीब और बेगुनाह
बेबस और मज़बूर
व्यापारी के रूप में
शर्म से पानी पानी होकर
अपनी इज़्जत मिट्टी में मिलाकर
संगीन गुनहगार क़ैदी हूँ
मुझ पर मेरे अपने ही
ऐसे बेईमान ग्राहकों ने
खराब माल और घटिया सुविधा
देने का इल्ज़ाम लगाया है
जिनके उपर मेरे लाखों रूपये
उधारी का बकाया है
जबकि मैंने पूरी मेहनत,
निष्ठा और ईमानदारी से
उनके साथ उनकी शर्तों
और उनकी सुविधा से
नैतिक व्यापार किया है

सलाहकार

जेल की सलाख़ों के पीछे
ऐसा बदनसीब और बेगुनाह
बेबस और मज़बूर
सलाहकार के रूप में
शर्म से पानी पानी होकर
अपनी इज़्ज़त मिट्टी में मिलाकर
संगीन गुनहगार क़ैदी हूँ
मुझ पर मेरे अपने ही
ऐसे बेईमान ग्राहकों ने
घटिया सुविधा और सेवायें
देने का इल्ज़ाम लगाया है
जबकि मेरे ग्राहकों को
मेरी उचित सलाह से समय समय पर
शारीरिक, आर्थिक, मानसिक
और सामाजिक फायदा हुआ है

बेगुनाह

जेल की सलाख़ों के पीछे
बेबस और मज़बूर होकर
मैं ऐसा बदनसीब
और बेगुनाह क़ैदी हूँ
जो उस गुनाह की
शर्म से पानी पानी होकर
अपनी इज़्ज़त मिट्टी में मिलाकर
बेशर्म सजा भुगत रहा हूँ
जो गुनाह मैंने किया ही नहीं

क्योंकि ख़ुद पुलिस ने ही
अपनी ग़लतियों को छुपाने के लिये
या फिर राजनैतिक, सरकारी,
सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक
दबाव में ख़ुद पुलिस ने ही
बिना सुबूतों और गवाहो के
मुझ पर झूठा इल्ज़ाम लगाया है

गुनहगार

बहुत सारे ऐसे हत्यारे,
बलात्कारी, चोर, लुटेरे, बेईमान,
भ्रष्टाचारी, देशद्रोही, रिश्वतखोर,
आंतकवादी और अत्याचारी हैं कि
इन सबको जेल की सलाख़ों के पीछे
उम्र क़ैद या
फिर इन सबको
मौत की सज़ा में होना चाहिये
मगर यह सब दौलत और
रसुक़ात की वज़ह से
गुनाहागार होकर भी
मान और सम्मान से
शान से ज़माने में रहते हैं

परिजन

जेल की सलाख़ों के बाहर
ऐसे बेगुनाह और बदनसीब
बेबस और मज़बूर क़ैदी हैं
जो उपरोक्त सभी

बेबस और बेगुनाह क़ैदियों के
परिजन, रिश्तेदार और दोस्त हैं
जो ज़माने की नज़र में
तौहीन और ज़लालत से
हीन भावना से ग्रसित
और शर्मसार होकर
शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक
और मानसिक रूप से
बिना वज़ह प्रताड़ित होकर
अपने-अपने घरों में क़ैद हैं

स्वयं

जेल की सलाख़ों के बाहर
मैं बदनसीब और बेगुनाह
बेबस और मज़बूर क़ैदी हूँ
जो ख़ुद को दिल और दिमाग़ से
ऐसा गुनाहगार क़ैदी मानता हूँ
जो अपने परिजनों, रिश्तेदारों,
दोस्तों, समाज और देश की
उम्मीदों और आशाओं पर
खरा साबित नहीं हुआ
भले ही मैं उनकी उम्मीदों और
आशाओं के लायक नहीं था
फिर भी मैं उन सारी
ग़लतियों और भूलों के लिये
तन मन से क्षमा प्रार्थी हूँ
जो मैंने जाने अनजाने में
किये हैं या नहीं किये हैं

बेटा

कोई कितना भी
बेटा नालायक हो जाये
वह माता पिता की नज़रों में
कभी भी क़ुसूरवार नहीं होता है
अगर गुनहगार है तो
उसका ख़ुशहाल जीवन भी
नर्क से भी बदतर है
अगर मेरे माता और पिता
मुझे गुनहगार मानते हैं तो
जेल की सलाख़ों के बाहर
मैं ऐसा क़ुसूरवार क़ैदी हूँ
जिसे किसी भी हालात में
जीने का अधिकार नहीं है
अगर देश का कोई भी क़ानून
मुझे सज़ा नहीं दे पाये तो
मुझे ख़ुदकुशी करके
अपने बेकार जीवन को
ख़त्म कर लेना चाहिये।